शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 04 अंक– 13 जनवरी - मार्च - 2026 Impact factor– 4.5

बालिकाओं के शैक्षिक विकास में महात्मा गांधी का योगदान

रागिनी गौतम
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड विभाग
श्री अग्रसेन महिला महाविद्यालय, आजमगढ़ (उ.प्र.)

सारांश- महात्मा गांधी ने शिक्षा को भारतीय समाज के नैतिक, सामाजिक और आर्थिक पुनर्निर्माण का आधार माना। उनके विचार में स्त्री-शिक्षा केवल साक्षरता या डिग्री प्राप्ति तक सीमित न होकर आत्मनिर्भरता, नैतिक चेतना, सामाजिक सहभागिता और राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया से जुड़ी हुई है। गांधीजी का प्रसिद्ध कथन— "एक पुरुष को शिक्षित करने से एक व्यक्ति शिक्षित होता है, परंतु एक स्त्री को शिक्षित करने से पूरा परिवार शिक्षित होता है"— उनके स्त्री-शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण का सार प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोधपत्र में बालिकाओं के शैक्षिक विकास के संदर्भ में गांधीजी के विचारों, उनकी शिक्षा-दृष्टि, सामाजिक असमानताओं के प्रति उनके चिंतन तथा समकालीन परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: स्त्री-शिक्षा, नयी तालीम, आत्मनिर्भरता, ग्राम पुनर्निर्माण, कौशल विकास, लोकविद्या, महिला सशक्तिकरण।

प्रस्तावना-भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति ऐतिहासिक रूप से विरोधाभासी रही है। एक ओर उन्हें 'शक्ति' और 'माँ' के रूप में पूजनीय माना गया, वहीं दूसरी ओर शिक्षा, संपत्ति और निर्णय-निर्धारण के अधिकारों से वंचित रखा गया। सामाजिक रूढ़ियों, आर्थिक निर्भरता और पुरुषप्रधान मानसिकता ने स्त्रियों के शैक्षिक विकास को बाधित किया। महात्मा गांधी ने इस विडंबना को समझते हुए स्त्री-शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का अनिवार्य साधन माना। उनके लिए शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं थी, बल्कि व्यक्ति के समग्र विकास—शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति—का माध्यम थी। गांधीजी का विश्वास था कि राष्ट्र का वास्तविक उत्थान तभी संभव है जब उसकी आधी आबादी—अर्थात महिलाएँ—शिक्षित, जागरूक और आत्मनिर्भर हों। भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति ऐतिहासिक रूप से बहुआयामी रही है। एक ओर उसे 'शक्ति' और 'मातृत्व' का प्रतीक माना गया, तो दूसरी ओर सामाजिक संरचना ने उसे शिक्षा, संपत्ति और निर्णय-निर्माण के अधिकारों से वंचित रखा। स्त्री-शिक्षा का प्रश्न केवल साक्षरता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता और मानवाधिकारों से जुड़ा हुआ मुद्दा है। महात्मा गांधी ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम माना। उनके अनुसार शिक्षा व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा—तीनों का समन्वित विकास करती है। उन्होंने स्त्री -शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण की अनिवार्य शर्त बताया। गांधीजी का यह कथन कि "एक स्त्री को शिक्षित करने से पूरा परिवार शिक्षित होता है" इस तथ्य को रेखांकित करता है कि महिला शिक्षा समाज की आधारशिला है। गांधीजी की शिक्षा-दृष्टि केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण,आत्मनिर्भरता, श्रम की गरिमा और नैतिक मूल्यों पर आधारित थी। वे शिक्षा को ग्राम पुनर्निर्माण और स्वावलंबन की व्यापक योजना का अंग मानते थे। उनके अनुसार यदि महिलाएँ शिक्षित और आत्मनिर्भर होंगी, तो सामाजिक रूढ़ियाँ स्वतः समाप्त होंगी और समाज में समता की स्थापना होगी।

गांधीजी की शिक्षा-दृष्टि और स्त्री-शिक्षा- गांधीजी ने 'नयी तालीम' (Basic Education) की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें शिक्षा को श्रम, उत्पादन और नैतिक मूल्यों से जोड़ा गया। उनका मानना था कि शिक्षा जीवन से जुड़ी होनी चाहिए, न कि केवल परीक्षा-उन्मुख।स्त्री-शिक्षा के संदर्भ में उनके प्रमुख विचार निम्नलिखित हैं—

(क) समग्र विकास की शिक्षा- गांधीजी का मत था कि शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण होना चाहिए। बालिकाओं को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए जो उनमें आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करे।

(ख) समानता पर आधारित शिक्षा- उन्होंने स्त्री और पुरुष को एक ही सत्ता के दो रूप माना। उनके अनुसार महिलाओं को स्वयं को पुरुषों से हीन या आश्रित नहीं समझना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से यह मानसिक दासता समाप्त की जा सकती है।

(ग) जनसामान्य के अनुकूल शिक्षा-गांधीजी ने शिक्षा को ग्रामीण भारत की आवश्यकताओं से जोड़ने पर बल दिया। उनका मानना था कि शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जो व्यापक जनसमुदाय, विशेषकर ग्रामीण महिलाओं, के जीवन को उन्नत कर सके।

शिक्षा और सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन

गांधीजी भली-भाँति जानते थे कि महिलाओं की दर्दशा का कारण केवल अशिक्षा नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना में निहित असमानता है। बाल विवाह, पर्दा प्रथा, दहेज, संपत्ति में अधिकार की कमी आदि समस्याएँ स्त्री-शिक्षा में बाधक थीं।

उन्होंने कहा कि शिक्षित महिलाएँ समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और रूढ़ियों के विरुद्ध रचनात्मक विद्रोह करें। यह विद्रोह हिंसात्मक नहीं, बल्कि नैतिक और तर्कसंगत होना चाहिए। शिक्षा महिलाओं को सामाजिक बंधनों से मुक्त करने का माध्यम बन सकती है।

शिक्षा और आत्मनिर्भरता का संबंध= गांधीजी की शिक्षा-दृष्टि में आत्मनिर्भरता का विशेष स्थान है। वे मानते थे कि शिक्षा व्यक्ति को रोजगारोन्मुख बनाये।

(क) व्यावसायिक शिक्षा का महत्व- माध्यमिक स्तर से ही कौशल आधारित पाठ्यक्रम आरंभ किये जाएँ। हस्तशिल्प, कृषि-आधारित उद्योग, बुनाई, सिलाई, कढ़ाई, खाद्य प्रसंस्करण आदि को शिक्षा में शामिल किया जाए। स्वास्थ्य कार्यकर्ता, प्राथमिक चिकित्सा, मिडवाइफरी जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया जाए।

(ख) लोकविद्या और स्वदेशी-गांधीजी ने लोकविद्या और स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा दिया। उनका मानना था कि स्थानीय संसाधनों पर आधारित शिक्षा से ग्रामीण बालिकाएँ आत्मनिर्भर बन सकती हैं।

(ग) आर्थिक स्वतंत्रता- आर्थिक आत्मनिर्भरता स्त्री-सशक्तिकरण की कुंजी है। जब महिलाएँ आर्थिक रूप से सक्षम होंगी, तभी वे सामाजिक और पारिवारिक निर्णयों में प्रभावी भूमिका निभा सकेंगी।

शिक्षा में लैंगिक असमानता: एक विश्लेषण-स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति हुई, परंतु लैंगिक असमानता बनी रही। 1991 की जनगणना के अनुसार महिला साक्षरता दर पुरुषों की तुलना में काफी कम थी। हालाँकि प्राथमिक स्तर पर बालिकाओं के नामांकन में वृद्धि हुई और विद्यालय छोड़ने की दर में कमी आई, फिर भी उच्च शिक्षा और तकनीकी क्षेत्रों में उनकी भागीदारी सीमित रही। इस स्थिति के प्रमुख कारण—

- आर्थिक तंगी
- सामाजिक रूढ़ियाँ
- विद्यालयों की कमी
- सुरक्षा संबंधी चिंताएँ
- विवाह को प्राथमिकता

गांधीजी के विचारों के आलोक में यह स्पष्ट है कि शिक्षा को जीवनोपयोगी और समाजोपयोगी बनाकर ही इस असमानता को कम किया जा सकता है।

कार्यस्थल और सामाजिक संरचना में सुधार की आवश्यकता

उच्च शिक्षित महिलाओं का एक बड़ा वर्ग विवाह और पारिवारिक दायित्वों के कारण रोजगार क्षेत्र से बाहर हो जाता है। यह राष्ट्र की मानव संसाधन शक्ति का अपूर्ण उपयोग है।

समाधान के रूप में—

- कार्यस्थलों पर शिशु देखभाल केंद्र स्थापित किये जाएँ।
- लचीले कार्य-घंटे और अंशकालिक रोजगार उपलब्ध हों।
- सुरक्षित परिवहन की व्यवस्था हो।
- सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाया जाए।

ये उपाय गांधीजी की उस सोच के अनुरूप हैं जिसमें समाज की संपूर्ण व्यवस्था स्त्री-उत्थान के लिए उत्तरदायी मानी गई है।

समकालीन संदर्भ में गांधीवादी शिक्षा की प्रासंगिकता-आज 'आत्मनिर्भर भारत', 'कौशल विकास', 'डिजिटल शिक्षा' जैसे कार्यक्रम गांधीजी की शिक्षा-दृष्टि से साम्य रखते हैं। यदि बालिकाओं को प्रारंभिक स्तर से ही डिजिटल साक्षरता, उद्यमिता और व्यावसायिक कौशल प्रदान किये जाएँ, तो वे राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। गांधीजी का लक्ष्य केवल शिक्षित महिला नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों से युक्त, सामाजिक रूप से जागरूक और आत्मनिर्भर महिला का निर्माण था।

सैद्धांतिक रूपरेखा -इस शोधपत्र का सैद्धांतिक आधार निम्नलिखित अवधारणाओं पर आधारित है—

(क) गांधीवादी शिक्षा-दर्शन -गांधीजी की 'नयी तालीम' (Basic Education) की अवधारणा के अनुसार—

- शिक्षा जीवनोपयोगी और श्रम-संबद्ध होनी चाहिए।
- शिक्षा का उद्देश्य आत्मनिर्भर नागरिक बनाना है।
- नैतिकता, सत्य और अहिंसा शिक्षा के मूल तत्व हैं।

(ख) मानव पूंजी सिद्धांत -यह सिद्धांत बताता है कि शिक्षा में निवेश व्यक्ति की उत्पादकता और राष्ट्र की आर्थिक उन्नति को बढ़ाता है। स्त्री-शिक्षा में निवेश से परिवार और समाज दोनों को दीर्घकालिक लाभ मिलता है।

(ग) नारीवादी दृष्टिकोण -नारीवादी विचारधारा के अनुसार शिक्षा लैंगिक असमानता को समाप्त करने का सशक्त माध्यम है। गांधीजी ने स्त्री को पुरुष के समान अधिकार और सम्मान देने की वकालत की, जो नारीवादी दृष्टिकोण से सामंजस्य रखती है।

(घ) सामाजिक पुनर्निर्माण सिद्धांत - इस सिद्धांत के अनुसार शिक्षा समाज में व्याप्त असमानताओं को दूर करने का माध्यम है। गांधीजी ने शिक्षा को सामाजिक पुनर्निर्माण का उपकरण माना।

शोध-पद्धति -यह शोधपत्र मुख्यतः गुणात्मक (Qualitative) और विश्लेषणात्मक (Analytical) पद्धति पर आधारित है।

(क) अनुसंधान का प्रकार

वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन।

ऐतिहासिक दस्तावेजों और गांधी साहित्य का अध्ययन।

(ख) स्रोत—प्राथमिक स्रोत: गांधीजी के लेख, भाषण, 'यंग इंडिया', 'हरिजन' आदि पत्रिकाएँ।

द्वितीयक स्रोत: पुस्तकों, शोध-पत्रों, जनगणना रिपोर्टों एवं शिक्षा संबंधी सरकारी दस्तावेजों का अध्ययन।

(ग) डेटा विश्लेषण-

संग्रहित सामग्री का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है, ताकि स्त्री-शिक्षा के संदर्भ में गांधीजी के योगदान को स्पष्ट किया जा सके।

शोध-परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

1. गांधीजी की शिक्षा-दृष्टि बालिकाओं के समग्र विकास को प्रोत्साहित करती है।
2. व्यावसायिक एवं कौशल आधारित शिक्षा बालिकाओं की आत्मनिर्भरता में सहायक है।
3. स्त्री-शिक्षा में वृद्धि से सामाजिक एवं आर्थिक असमानता में कमी आती है।
4. गांधीवादी शिक्षा सिद्धांत वर्तमान महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों के लिए प्रासंगिक है।

बालिकाओं के शैक्षिक विकास में गांधीजी का योगदान

(क) समता और आत्मसम्मान की भावना-गांधीजी ने स्त्री को पुरुष के समकक्ष माना। उन्होंने महिलाओं को सामाजिक अन्याय के विरुद्ध जागरूक होने का आह्वान किया।

(ख) व्यावसायिक शिक्षा का समर्थन-उन्होंने शिक्षा को उत्पादन और श्रम से जोड़ा। बालिकाओं को कौशल आधारित शिक्षा देकर आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करने पर बल दिया।

(ग) ग्रामीण महिलाओं के लिए शिक्षा-गांधीजी ने ग्रामीण भारत की महिलाओं की समस्याओं को समझते हुए शिक्षा को उनके जीवन से जोड़ने की बात कही।

(घ) नैतिक और मूल्यपरक शिक्षा-उन्होंने शिक्षा में नैतिक मूल्यों—सत्य, अहिंसा, करुणा—को प्रमुख स्थान दिया।

निष्कर्ष-महात्मा गांधी का स्त्री-शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण न केवल दूरदर्शी और मानवतावादी था, बल्कि वह भारतीय समाज की वास्तविक आवश्यकताओं और चुनौतियों पर आधारित भी था। उन्होंने स्पष्ट रूप से यह प्रतिपादित किया कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति तब तक संभव नहीं है, जब तक उसकी महिलाएँ शिक्षित, जागरूक और आत्मनिर्भर न हों। उनके अनुसार, स्त्री-शिक्षा केवल अक्षरज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसमें नैतिक मूल्यों, आत्मसम्मान, स्वावलंबन तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का समावेश होना चाहिए। गांधीजी ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम माना और यह विश्वास व्यक्त किया कि शिक्षित महिला न केवल अपने परिवार का, बल्कि पूरे समाज का निर्माण करती है। उन्होंने 'नैतिक शिक्षा' और 'कार्य-आधारित शिक्षा' (बेसिक एजुकेशन) पर विशेष बल दिया, जिससे महिलाएँ आर्थिक रूप से सशक्त बन सकें और अपने अधिकारों के प्रति सजग रह सकें। वर्तमान संदर्भ में, जब समाज तेजी से बदल रहा है और महिलाओं की भूमिका हर क्षेत्र में बढ़ रही है, गांधीजी के विचार और भी प्रासंगिक हो जाते हैं। यदि शिक्षा को जीवनोपयोगी, मूल्यपरक, कौशल-आधारित तथा रोजगारोन्मुख बनाया जाए, तो बालिकाएँ न केवल आत्मनिर्भर बनेंगी, बल्कि वे नेतृत्वकर्ता, नवप्रवर्तक और सामाजिक परिवर्तन की वाहक भी बन सकती हैं। अतः यह आवश्यक है कि नीति-निर्माता, शिक्षाविद् और समाज मिलकर गांधीजी के सिद्धांतों को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में समाहित करें, ताकि महिला शिक्षा को एक सशक्त दिशा मिल सके। इस प्रकार, स्त्री-शिक्षा के माध्यम से एक समतामूलक, सशक्त और प्रगतिशील समाज की स्थापना संभव हो सकेगी, जो राष्ट्र के समग्र और सतत विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

****

संदर्भ सूची

1. गांधी, महात्मा (1929). *Young India*.
2. गांधी, महात्मा (1937). *Basic Education (Nai Talim)*.
3. गांधी, महात्मा. *Harijan*. विभिन्न अंक।
4. राधाकृष्णन, एस. (1967). *Great Women of India*.
5. Census of India (1991). Government of India.
6. Aggarwal, J.C. (2009). *Development of Education System in India*.
7. Nanda, B.R. (1995). *Mahatma Gandhi: A Biography*.
8. Government of India. (Va